बू

सआदत हसन मंटो

बरसात के यही दिन थे। खिड़की के बाहर पीपल के पत्ते इसी तरह नहा रहे थे। सागवान के उस स्प्रिंगवाले पलंग पर, जो अब खिड़की के पास से ज़रा उधर को सरका दिया गया था, एक घाटन लौंडिया रनधीर के साथ चिपकी हुई थी।

खिड़की के बाहर पीपल के पत्ते रात के दूधियाले अंधेरे में झुमकों की तरह थरथरा रहे थे और नहा रहे थे और वह घाटन लौंडिया रनधीर के साथ कंपकंपाहट बनकर चिपकी हुई थी।

शाम के करीब, दिन भर एक अंग्रेज़ी अख़बार की तमाम ख़बरें और इश्तिहार पढ़ने के बाद जब वह बालकनी में ज़रा तफ़रीह की ख़ातिर आ खड़ा हुआ था तो उसने इस घाटन लड़की को, जो साथ वाले रस्सियों के कारख़ाने में काम करती थी और बारिश से बचने के लिए इमली के दरख़्त के नीचे खड़ी थी, खांस-खांकारकर अपनी तरफ देखने को मजबूर किया था और आख़िर में हाथ के इशारे से उसे ऊपर बुला लिया था।

वह कई दिनों से एक उदास किस्म की तन्हाई महसूस कर रहा था। जंग के कारण बंबई की क़रीब-क़रीब तमाम क्रिश्चियन छोकरियां, जो पहले सस्ते दामों पर मिल जाती थीं, औरतों की एग्ज़ालरी फ़ोर्स में भर्ती हो गई थीं। उनमें से कुछ ने फोर्ट के इलाके में डांसिंग स्कूल खोल लिए थे जहां सिर्फ़ फ़ौजी गोरों को जाने की इजाज़त थी... रनधीर बहुत उदास हो गया था। उसकी उदासी की एक वजह तो यह थी कि क्रिश्चियन छोकरियां नायाब हो गई थीं, दूसरी वजह यह भी थी कि रनधीर जो फ़ौजी गोरों के मुकाबले में हीं ज़्यादा शिक्षित, सेहतमंद और खूबसूरत था, सिर्फ़ इसलिए उस पर फ़ोर्ट के दरवाज़े बंद कर दिए गए थे कि उसकी चमड़ी सफ़ेद नहीं थी।

जंग से पहले रनधीरा नागपाड़ा और ताज होटल की कई क्रिश्चियन लड़कियों से जिस्मानी मुलाक़ात कर चुका था। उसे अच्छी तरह मालूम था कि ऐसी मुलाक़ातों के कारण से वह उन क्रिश्चियन लौंड़ों के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा पहचान रखता है जिनसे यह लड़कियां फ़ैशन के तौर पर रोमांस लड़ाती हैं और बाद में किसी दूसरे से शादी कर लेती है।

रनधीर ने महज़ दिल में हैज़ल से उसकी ताज़ा-ताज़ा पैदा घमंड का बदला लेने की ख़ातिर उस घाटन लड़की को इशारे से ऊपर बुलाया था। हैज़ल उसके फ़्लैट के नीचे रहती थी और हर रोज़ सुबह को वर्दी पहनकर और अपने कटे हुए बालों पर ख़ाकी रंग की टोपी तिरछी जमाकर बाहर निकलती थी और इस अंदाज़ से चलती थी फुटपाथ पर तमाम जाने वाले उसके क़दमों के आगे टाट की तरह बिछते चले जाएंगे।

रनधीर ने सोचा था कि आख़िर वह क्यों उन क्रिश्चियन छोकरियों की तरफ इतना आसक्त है। इसमें कोई शक नहीं कि वह अपने जिस्म की तमाम क़ाबिले-नुमाइश चीज़ों की अच्छी तरह नुमाइश करती हैं। किसी किस्म की झिझक महसूस किए बग़ैर अपने अय्याम की बेतरतीबी का ज़िक्र कर देती हैं। अपने पुराने आशिकों का हाल सुनाती हैं। जब डांस की धुन सुनती हैं तो अपनी टांगें थिरकाना शुरू कर देती हैं— यह सब ठीक है लेकिन कोई भी औरत इन तमाम ख़ूबियों की मालिक हो सकती है।

रनधीर ने जब घाटन लड़की को इशारे से ऊपरे बुलाया था तो उसे हरगिज़-हरगिज़ यक़ीन नहीं था कि वह उसको अपने साथ सुला सकेगा, लेकिन थोड़ी ही देर के बाद जब उसने उसके भीगे हुए कपड़े देखकर यह ख़याल किया था, कहीं ऐसा न हो, बेचारी को निमोनिया हो जाए तो रनधीर ने उससे कहा थाः "यह कपड़े उतार दो, सर्दी लग जाएगी...।"

वह उसका मतलब समझ गई थी, क्योंकि उसकी आंखों में शर्म के लाल डोरे तैर गए थे मगर बाद में जब रनधीर ने उसे अपनी सफ़ेद धोती निकालकर दी तो उसने कुछ देर सोचकर अपना कुर्त्ता खोला जिसका मैल भीगने के कारण और ज़्यादा उभर आया था— कुर्त्ता खोलकर उसने एक तरफ रख दिया और जल्दी से सफ़ेद धोती अपनी रानों पर डाल ली। फिर उसने अपनी फंसी-फंसी चोली उतारने की कोशिश शुरू की जिसके दोनों किनारों को मिलाकर उसने एक गांठ दे रखी थी। यह गांठ उसके तंदुरुस्त सीने के नन्हें मगर मैले गढ़े में धंस गई थी।

देर तक वह अपने घिसे हुए नाख़ूनों की मदद से चोली की गिरह खोलने की कोशिश करती रही जो बारिश के पानी से बहुत ज़्यादा मज़बूत हो गई थी। जब थककर हार गई तो उसने धीमी ज़बान में रनधीर से कुछ कहा जिसका मतलब यह था: 'मैं क्या करूं, नहीं खुलती...'

रनधीर उसके पास बैठ गया और गिरह खोलने लगा। थक-हारकर उसने एक हाथ में चोली का एक सिरा पकड़ा, दूसरे हाथ में दूसरा, और ज़ोर से खींचा। गिरह एकदम फिसली, रनधीर के हाथ ज़ोर में इधर-उधर हटे और दो धड़कती हुई छातियां उजागर हुईं। रनधीर ने एक लहज़े के लिए ख़याल किया कि उसके अपने हाथों ने उस घाटन लड़की के सीने पर नर्म-नर्म गुंधी हुई मिट्टी को चाबुकदस्त कुम्हार की तरह दो प्यालों की शक्ल दे दी है।

उसकी सेहतमंद छातियों में वही गदराहट, वही तरावट, वही गर्म-गर्म ठंडक थी, जो कुम्हार के हाथों से निकले हुए ताज़ा-ताज़ा कच्चे बर्तनों में होती है।

मटमैले रंग की उस जवान छातियों में, जो बिल्कुल बेदाग थीं, एक अजीब़ क़िस्म की चमक थी। सियाही माइल गंदुमी रंग के नीचे धुंधली रोशनी की एक तह-सी थी जिसने यह अजीबो-ग़रीब चमक पैदा कर दी थी जो चमक होने के बावजूद चमक नहीं थी। उसके सीने पर छातियों के यह उभार दीए मालूम होते थे, जो तालाब के गदले पाने के अंदर जल रहे हों।

बरसात के यही दिन थे। खिड़की के बाहर पीपल के पत्ते कंपकंपा रहे थे। उस घाटन लड़की के दोनों कपड़े, जो पानी से सराबोर हो चुके थे, एक ढेरी की शक्ल में फ़र्श पर पड़े थे और वह रनधीर के साथ चिपटी हुई थी। उसके नंगे और मैले बदन की गर्मी रनधीर के जिस्म में वह कैफ़ियत पैदा कर रही थी जो सख़्त सर्दियों में नाइयों के गंदे मगर गर्म हम्माम में नहाते वक़्त महसूस हुआ करती है।

सारी रात वह रनधीर के साथ चिपटी रही। दोनों एक-दूसरे में लीन हो गए थे। उन्होंने बमुश्किल एक-दो बातें की होंगी, क्योंकि जो कुछ उन्हें कहना-सुनना था, सांसों, होंठों और हाथों से तय होता रहा था। रनधीर के हाथ सारी रात उसकी छातियों पर फिरते रहे। छोटी-छोटी चूचियां और वह मोटे-मोटे रोमछिद्र जो उनके इर्द-गिर्द एक काले दायरे की शक्ल में फैले हुए थे, उस हवाई लम्स से जाग उठते और उस घाटन लड़की के सारे जिस्म में ऐसी कंपन पैदा हो जाती कि रनधीर खुद भी एक लम्हें के लिए कंपकंपा उठता।

ऐसी कंपकंपाहटों से रनधीर का सैकड़ों मर्तबा परिचय हो चुका था। वह उसकी लज़्ज़त से अच्छी तरह आश्ना था। कई लड़कियों के नर्म और सख़्त सीनों के साथ अपना सीना मिलाकर वह ऐसी रातें गुज़ार चुका था। वह ऐसी लड़कियों के साथ भी रह चुका था जो बिलकुल अल्हड़ थीं और उसके साथ लिपटकर घर की वह तमाम बातें सुना दिया करती थीं जो किसी ग़ैर को नहीं सुनाना चाहिए। वह ऐसी लड़कियों से भी जिस्मानी रिश्ता क़ायम कर चुका था जो सारी मशक़्क़त ख़ुद करती थीं और उसे कोई तकलीफ़ नहीं देती थीं, मगर यह घाटन लड़की जो इमली के दरख़्त के नीचे भीगी हुई खड़ी थी और जिसको उसने इशारे से ऊपर बुला लिया था, बहुत ही मुख़्तलिफ़ थी।

सारी रात रनधीर को उसके बदन से अजीबो-गरीब क़िस्म की बू आती रही थी। उस बू को जो ख़ुशबू और बदबू दोनों थी, वह तमाम रात पीता रहा था। उसकी बग़लों से, उसकी छातियों से, उसके बालों से, उसके पेट से, हर जगह से यह बू जो बदबू भी थी और ख़ुशबू भी, रनधीर की हर सांस में मौजूद थी। तमाम रात वह सोचता रहा था कि यह घाटन लड़की बिलकुल क़रीब होने पर भी हरगिज़-हरगिज़ इतनी ज़्यादा क़रीब न होती, अगर उसके नंगे बदन से यह बू न उड़ती-यह बू जो उसके दिलो-दिमाग़ की हर सलवट में रेंग गई थी, उसके तमाम पुराने और नए ख़यालों में रच गई थी।

उस बू ने उस लड़की को और रनधीर को एक रात के लिए आपस में एकम-एक कर दिया था। दोनों एक-दूसरे के अंदर दाख़िल हो गए थे, गहराइयों में उतर गए थे जहां पहुंचकर वह एक ख़ालिस इंसानी लज़्ज़त में तब्दील हो गए थे, ऐसी लज़्ज़त जो लम्हाती होने के बावजूद कायम थी। वह दोनों एक ऐसा पंछी बन गए थे जो आसमान की नीलाहटों में उड़ता-उड़ता स्थिर दिखाई देता है।

उस बू को जो उस घाटन लड़की के रोम-रोम से बाहर निकली थी, रनधीर अच्छी तरह समझता था, हालांकि वह इसकी व्याख्या नहीं कर सकता था। जिस तरह मिट्टी पर पानी छिड़कने से सोंधी-सोंधी बास पैदा होती है, लेकिन नहीं, वह बू कुछ और ही क़िस्म की थी। इसमें लैवंडर और इत्र का बनावटीपन नहीं था। वह बिलकुल असली थी-औरत और मर्द के बाहमी ताल्लुक़ात की तरह असली और उज़ली।

रनधीर को पसीने की बू से सख़्त नफ़रत थी। वह नहाने के बाद आमतौर पर अपनी बग़लों में ख़ुशबूदार पाउडर लगाता था या कोई ऐसी दवा इस्तेमाल करता था जिससे पसीने की बू दब जाए लेकिन हैरत है कि उसने कई बार, हां, कई बार उस घाटन लड़की की बालों भरी बग़लों को चूमा और उसे बिलकुल घिन न आई,बल्कि उसे अजीब तरह की लज़्ज़त महसूस हूई। उसकी बग़लों के नर्म-नर्म बाल पसीने से गीले हो रहे थे। उनसे भी वही बू निकली थी जो अत्यधिक पहचानी होने के बावजूद अनजानी थी। रनधीर को ऐसा लगा था कि वह उस बू को जानता है, पहचानता है, उसका मतलब भी समझता है, लेकिन किसी और को यह मतलब समझा नहीं सकता।

बरसात के यही... दिन थे इसी खिड़की के बाहर जब उसने देखा था तो पीपल के पत्ते लरज़-लरज़कर नहा रहे थे, हवा में सरसराहटें और फड़फड़ाहटें घुली हुई थीं। अंधेरा था मगर उसमें दबी-दबी धुंधली सी रोशनी भी समाई हुई थी, जैसे बारिश के क़तरों के साथ लगकर तारों की थोड़ी-थोड़ी रोशनी उतर आई हो- बरसात के यही दिन थे जब रनधीर के इसी कमरे में सागवान का सिर्फ़ एक पलंग होता था, मगर अब उसके साथ ही एक दूसरा भी पड़ा था और कोने में नई ड्रैसिंग टेबल भी मौजूद थी। दिन यही बरसात के थे, मौसम भी बिलकुल ऐसा ही था, बारिश के क़तरों के साथ तारों की थोड़ी-थोड़ी रोशनी भी उतर रही थी, मगर फ़ज़ा में हिना के इत्र की तेज़ खुशबू बसी हुई थी।

दूसरा पलंग खाली था। उस पलंग पर, जिस पर रनधीर औंधे मुंह लेटा खिड़की के बाहर पीपल के लरज़ते हुए पत्तों पर बारिश के कतरों का नृत्य देख रहा था, एक गोरी-चिट्टी लड़की अपने नंगे जिस्म से छुपाने की नाकाम कोशिश करते-करते सो गई थी... उसकी लाल रेशमी सलवार दूसरे पलंग पर पड़ी थी। उसके गहरे सुर्ख़ कुर्ते का एक फुंदना नीचे लटक रहा था। उस पलंग पर उसके दूसरे उतरे हुए कपड़े भी पड़े थे। उसकी सुनहरे फूलों वाली अंगिया, जांघिया और दुपट्टा... सबका रंग सुर्ख था, बेहद सुर्ख। यह सब कपड़े हिना के इत्र की तेज़ खुशबू में बसे हुए थे।

लड़की के काले बालों में मुक़्क़ैश के कण गर्द की तरह जमे हुए थे। चेहरे पर सुर्खी और मुक़्क़ैश के इन कतरों ने मिल-जुलकर एक अजीबो-ग़रीब रंग पैदा कर दिया था, बेजान सा उड़ा और उसके गोरे सीने पर अंगिया के कच्चे रंग ने लाल-लाल धब्बे डाल दिए थे।

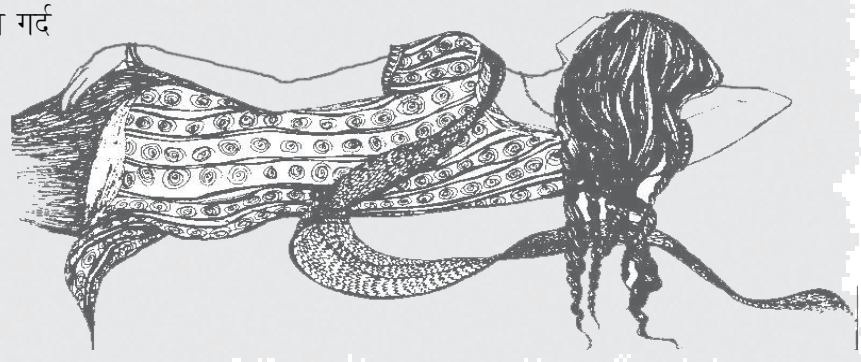

छातियां दूध की तरह सफ़ेद थीं, जिसमें थोड़ी-थोड़ी नीलाहट भी होती है। बग़लों के बाल मुंडे हुए जिसके वहां सुर्मई ग़ुबार-सा पैदा हो गया था। रनधीर कई बार उस लड़की की तरफ़ देखकर सोच चुका थाः क्या ऐसा नहीं लगता जैसे मैंने अभी-अभी कीलें उखेड़कर उसे लकड़ी के बंद बक्स में से निकाला है, किताबों और चीनी के बर्तनों की तरह, क्योंकि जिस तरह किताबों पर दाब के निशान होते हैं और चीनी के बर्तनों पर हिलने-जुलने से ख़राशें आ जाती हैं, ठीक इसी तरह इस लड़की के बदन पर कई जगह ऐसे निशान थे।

जब रनधीर ने उसकी तंग और चुस्त अंगिया की डोरियां खोली थीं तो पीठ पर और सामने सीने के नर्म-नर्म गोश्त पर झुर्रियां सी बनी हुई थीं और कमर के इर्द-गिर्द कसकर बंधे हुए नाड़े का निशान... वज़नी और नोकीले जड़ाऊ नेकलेस से उसके सीने पर कई जगह ख़राशें पैदा हो गई थीं, जैसे नाख़ूनों से बड़े ज़ोर के साथ खुजाया गया हो। बरसात के वही दिन थे, पीपल की नर्म-नर्म कोमल पत्तियों पर बारिश के कतरे गिरने से वैसी ही आवाज़ पैदा हो रही थी, जैसी कि रनधीर उस रोज़ तमाम रात सुनता रहा था। मौसम बहुत खुशगवार था। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी, लेकिन उसमें हिना के इत्र की तेज़ ख़ुशबू घुली हुई थी।

रनधीर के हाथ बहुत देर तक उस गोरी-चिट्टी लड़की के कच्चे दूध जैसे सफ़ेद सीने पर हवाई लम्स की तरह फिरते रहे। उसकी उंगलियों ने उस गोरे-गोरे जिस्म में कई कंपन दौड़ते हुए महसूस किए। इस नर्म-नर्म जिस्म के कई हिस्सों में उसे सिमटी हुई कंपकंपाहटों का भी पता चला। जब उसने अपना सीना उसके सीने के साथ मिलाया तो रनधीर के जिस्म के हर रोम ने उस लड़की के छेड़े हुए तारों की आवाज़ सुनी... लेकिन वह पुकार कहां थी, वह पुकार जो उसने घाटन लड़की के जिस्म की बू में सूंघी थी, वह पुकार जो दूध के प्यासे बच्चे के रोने से कहीं ज़्यादा जानी-समझी थी, वह पुकार जो ध्वनि की सीमाओं से निकलकर बेआवाज़ हो गई थी।

रनधीर सलाखों वाली खिड़की से बाहर देख रहा था। उसके बहुत क़रीब पीपल के पत्ते लरज़ रहे थे, मगर वह उनकी लरज़िशों के उस पार, दूर बहुत दूर देखने की कोशिश कर रहा था, जहां उसे मटमैले बादलों में एक अजीब क़िस्म की धुंधली रोशनी घुली हुई दिखाई देती थी, जैसे उस घाटन लड़की के सीने में उसे नज़र आई थी, ऐसी रोशनी जो राज़ की बात की तरह छुपी हुई मगर ज़ाहिर थी।

रनधीर के पहलू में एक गोरी-चिट्टी लड़की, जिसका जिस्म दूध और घी मिले आटे की तरह मुलायम था, लेटी थी, उसके सोए हुए जिस्म से हिना के इत्र की खुशबू आ रही थी जो अब थकी-थकी मालूम होती थी। रनधीर को यह दम तोड़ती हुई खुशबू बहुत नागवार मालूम हुई। उसमें कुछ खटास-सी थी एक अजीब क़िस्म की खटास जो बदहज़मी की डकारों में होती है, उदास, बेरंग, बेकैफ़।

रनधीर ने अपने पहलू में लेटी हुई लड़की की तरफ देखा। जिस तरह फटे हुए दूध में सफ़ेद-सफ़ेद बेजान फुटकियां बेरंग पानी में ठहरी होती हैं, उसी तरह उस लड़की का स्त्रीत्व उसके वजूद में ठहरा हुआ था, सफ़ेद-सफ़ेद धब्बों की सूरत में। असल में रनधीर के दिलो-दिमाग मे वह बू बसी हुई थी जो उस घाटन लड़की के जिस्म से बग़ैर किसी कोशिश के बाहर निकली थी। वह बू जो हिना के इत्र से कहीं ज़्यादा हल्की-फुल्की थी, जिसमें सूंघे जाने का ख्वाब नहीं था, जो खुद व खुद नाक के रास्ते दाखिल होकर अपनी सही मंज़िल पर पहुंच गई थी।

रनधीर ने आख़िरी कोशिश करते हुए उस लड़की के दूधियाले जिस्म पर हाथ फेरा, मगर उसे कोई कंपकंपाहट महसूस न हुई। उसकी नई-नवेली बीवी, जो फ़र्स्ट क्लास मैजिस्ट्रेट की लड़की थी, जिसने बी.ए. तक तालीम पाई थी और जो अपने कालिज में सैकड़ों लड़कों के दिल की धड़कन थी, रनधीर की नब्ज़ तेज़ न कर सकी... वह हिना की मरती हुई खुशबू में उस बू की तलाश करता रहा जो बरसात के इन्हीं दिनों में, जब खिड़की के बाहर पीपल के पत्ते बारिश में नहा रहे थे, उसे घाटन लड़की के मैले जिस्म से आई थी।